IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों के विद्यार्थियो के स्कूल वातावरण का अध्ध्य्यन करना।

प्रीतिदुबे (शोधार्थी)

डॉ. शुभ्राचतुर्वेदी (प्रोफेसर)

(शिक्षा संकाय)

जे.वी.जैन कॉलेज सहारनपुर

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध कार्य में उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों के स्कूल वातावरण का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों की स्कूल वातावरण का अध्ययन करना है।शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य हेतु वर्णनात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि एवंप्रतिदर्श चयन हेतु संभाव्य प्रतिदर्श विधि के अंतर्गत स्तरीकृत प्रतिदर्श विधि का प्रयोग करते हुए जनपद सहारनपुर के माध्यमिक विद्यालयोंमें कक्षा 12 में अध्ययनरत 240 विद्यार्थियों का चयन किया गया हैतथा आंकड़ों के संकलन हेतुशोध उपकरण के रूप में डॉ करुणाशंकर मिश्रा द्वारा निर्मित स्कूल वातावरण सूची ॅ(म्) का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य की परिकल्पना के प्रशिक्षण हेतु उपयुक्त सांख्यिकी तकनीक जैसे – Mean, S-D, t & Test dk प्रयोग किया गया है।

Key Word – उच्च माध्यमिक स्तर, ग्रामीण एवं नगरीयक्षेत्र, स्कूल वातावरण।

प्रस्तावना

"शिक्षा से मेरा अभिप्राय है कि बालक और मनुष्य केशरीर मन और आत्मा केउच्चतम विकास से है। महात्मा गॉधी शिक्षा मानव विकास की आधारशिला है यह बालक के जीवन को प्रगतिशील तथा सभ्य वगुणवत्तापूर्ण बनाती है। वास्तव में शिक्षा वह प्रकाश है जो बालक की आंतरिक शक्तियों को विकसित एवं अनुशासित करके व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने, एवं उसके अन्तःकरण एवं जीवन में व्याप्त अज्ञानता के अंधकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाशफैलाकर उसको विकास के पथ पर चलने हेतु सामर्थ्य प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा हीबालकमें उचित अनुचित की समझ और विवेक उत्पन्न होती है।

स्कूली शिक्षा मुख्य रूप से तीन भागों को बांटा गया है।प्राथमिक शिक्षा,माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा।प्राथमिक शिक्षा कक्षा एक से आठवीं तक की,माध्यमिक शिक्षा कक्षा 9 वीं व 10 वीं तक की एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा कक्षा 11 वीं व 12 वीं होती है।माध्यमिक शिक्षा संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है, यह प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी मानी जाती है। इस स्तर की शिक्षा के द्वारा बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास करने का प्रयास किया जाता है।यदि माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता श्रेष्ठ होती है तो प्राथमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा भी गुणात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ होती है।

स्कूल सबसे गतिशील संस्थान हैं, जो की समाज की बदलती आवश्यकताओं के साथ स्वयं में बदलाव लाता है स्कूल वातावरण प्रत्येक विद्यार्थी के ज्ञान,आदर्श,रुचि,आदर्श अभिवृद्धि व कौशल का अपनी संपूर्ण पाठ्यचर्या के द्वारा विकास करती है, साथ में विद्यार्थियों को सामाजिक क्रम में अपने लिए स्थान बनाने व अपनी समाजिक स्थिति के अनुसार समाज व राष्ट्र के विकास में योगदान देने योग्य बनाती है स्कूल का वातावरण सामाजिक कल्याण में सकारात्मक भूमिका निभाता है। स्कूल विद्यार्थियों के अनुभववसंपूर्ण विकास में एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके गुण,संरचना,संकल्पना,योजनाएं,व नीतियां विद्दयार्थियो केविकास में स्थायी प्रभाव डालते हैंतथा उसके व्यक्तिगत तौर – तरीकों,गुणों वअभिवृत्ति में परिवर्तन के लिए प्रभावपूर्ण मार्ग अपनाते हैं। स्कूलवातावरणमें छात्र संतुष्टिकरण के महत्त्व को पहचानना व कक्षा कक्ष जीवन के प्रति विद्यार्थियों की भावनाओं को स्थान दिया जाता है। किशोरों द्वारा अपने घर एवं स्कूल में निर्णय कौशल में सहभागिता का विकास उनके परिपक्व अभिवृद्धि व वांछनीय गुणों के विकास की निरंतर प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है। स्कूल की गुणवत्ता व सुविधाएँ वहाँ के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि व उनके व्यवहार में परिवर्तन करने महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

दो वातावरण घर और स्कूल बच्चे के जीवन में एक प्रभावशाली स्थान साझा करते हैं और दोनों (टकर और बर्नस्टीन, 1979) के बीच एक अद्वितीय संबंध मौजूद है। सागर और कपलान (1972) के अनुसार, अपने स्वभाव से, परिवार सामाजिक–जैविक इकाई है जो व्यक्ति के व्यवहार के विकास और प्रसार पर सबसे बड़ा प्रभाव डालती है। परिवार के बाद , स्कूल बाल विकास की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण अनुभव प्रदान करताहै। जब बच्चा स्कूल के क्षेत्र में प्रवेश करता है, तो उसे समाजीकरण और संज्ञानात्मक विकास के संदर्भ में नए अवसरों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। ये अवसर विभिन्न स्कूलों में विभिन्न उपायों में प्रदान किए जाते हैं और छात्रों के संज्ञानात्मक और स्नेहपूर्ण व्यवहार पर सीधा प्रभाव पड़ सकता है।

स्कूल वातावरण को हम संज्ञानात्मक, भावात्मक व सामाजिक गुण तथा मात्रा के रूप में माप सकते हैं जिसका अनुभव विद्यार्थियों के स्कूली जीवन में शिक्षक विद्यार्थी अंतक्रिया के रूप में कर सकते हैं।स्वस्थ स्कूल वातावरण के आवश्यक तत्वों (3p Place] Person and Process हैं।यह तीनों एक दूसरे के अनुरूप वह पूरक तत्व हैतथा सोहार्दपूर्ण वातावरण बनाते है। यह एक ऐसा स्थान, संगठन या समूह है जहाँ शिक्षा की प्रक्रिया किसी न किसी रूप में चलती रहती है तथा विद्यार्थियों के विकास पर प्रभाव डालती है।

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों के विद्दयार्थियो के स्कूल वातावरण का अध्ययन करना।

शोध का उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रोंके विद्यार्थियों के स्कूल वातावरण का अध्ध्यन करना।

शोध की परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों के स्कूल वातावरण मैं कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या से तात्पर्य जनपद सहारनपुर के माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 12 में अध्यनरत सभी विद्यार्थियों से है।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा प्रतिदर्श विधियों में से स्तरीकृत प्रतिदर्श विधि द्वारा 240 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसको निम्नवत प्रदर्शित किया जा रहा है।

क्षेत्र के आधार पर	ग्रामीण क्षेत्र	नगरीय क्षेत्र	योग
विद्यार्थियो की संख्या	120	120	240

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में आंकड़ों के संकलन हेतु शोध उपकरण के रूप में डॉ करुणाशंकर मिश्रा द्वारा निर्मित स्कूल वातावरण सूची का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के स्कूल वातावरण मैं कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 01

विद्यार्थियो का स्तर	प्रतिदर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (σ)	(t-test) (D÷σd)	सार्थकतास्तर . 05 /.01
ग्रामीण क्षेत्र	120	200.77	28.33	0.067	. 05 व. 01 दोनों स्तर पर असार्थक
नगरीय क्षेत्र	120	200.5	33.17		

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण तथा नगरीयक्षेत्रों के विद्दयार्थियो के मध्यमान क्रमशः 200.77 व 220.5 प्राप्त हुए है जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमश 28.33 व 33.17 है। दोनों मध्यमानों की तुलना करने पर टी परीक्षण का परिकलित मान 0.067 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्यों कमश 1.96 एवं 2.58 से कम है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य में बनायी गयी शून्य परिकल्पना "उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के स्कूल वातावरण मैं कोई सार्थक अंतर नहीं है।" स्वीकृत होती हैअर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की स्कूल वातावरण में कोई अंतर नहीं है दोनों ही क्षेत्र के स्कूलों के वातावरण समान है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है किक्षेत्र के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के स्कूल के वातावरण में कोई अंतर नहीं है अर्थात दोनोंक्षेत्रों की समान स्थिति होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लाल, रमनबिहारी (2014) शिक्षा के दार्शनिकआधार।आर. लालबुक डिपो मेरठ

2- Mishra,(2012) School Environment Inventory, National Psychological Corporation, Agra

3. यादव,मुरारी सिंह (2019)विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, मूल्य एवं व्यावसायिक आकांक्षा पर प्रभाव का अध्ययन(शोध प्रबंध) हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय,उत्तराखण्ड

4. कुमार,सुधीर (2017) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जोखिमपूर्ण व्यवहार पर उनके आकांक्षा स्तर आत्म जागरूकता तथा सामाजिक आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन। (शोध प्रबंधन) लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ

5- कुमार,अशोक (2018)माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के पारिवारिक वातावरण की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन। International journal of Creative Research Thought, IJCRT, Volume 6 Issue -ISSN& 2320&2882

6. गुप्ता,एस.पी. (2020) अनुसंधान संदर्शिकासम्प्रदाय कार्यविधि एवं प्रविधि। शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज